पार नज़र के

पाठ का सार / प्रतिपाद्य -

प्रस्तुत पाठ 'पार नज़र के' के लेखक 'जयंत विष्णु नार्लीकर' जी हैं। प्रस्तुत पाठ में वैज्ञानिक कल्पना शक्ति का सहारा लिया गया है। पृथ्वी से अलग दुनिया और भी है जहाँ जीवन है। पाठ में मंगल ग्रह और उसमें रह रहे लोगों के बारे में बताया गया है। मंगल ग्रह के वासी धरती के नीचे रहते हैं। एक समय की बात है सूर्य में आए परिवर्तन के कारण वहाँ के वातावरण का संतुलन बिगड़ गया। इस कारण वहाँ का जीवन खतरे में आ गया। जो लोग इस परिस्थिति का अनुकरण नहीं कर सके उनका अस्तित्व समाप्त हो गया। जिन्होंने स्वयं को बचाने के लिए उपाय ढुंढ लिया केवल उनका अस्तित्व ही सुरक्षित रहा। उस समय के लोगों ने स्वयं को बचाने के लिए धरती के अंदर जाकर रहना उचित समझा तथा धरती के अंदर के वातावरण तथा सुविधाओं को अपने अनुकूल बनाया। इसी प्रकार रहते काफी समय बीत गया।

एक दिन उसी ग्रह का निवासी एक छोटा बच्चा 'छोटू' अपने पापा का सिक्योरिटी-पास चुराकर उस ग्रह के अनुसंधान केन्द्र पहुँच जाता है परंतु वहाँ के वैज्ञानिकों द्वारा पकड़ा जाता है। छोटू के पापा वहाँ के अनुसंधान केन्द्र में कार्यरत रहते हैं। वे उसे वहाँ न जाने के लिए समझाते हैं। अगले दिन कंट्रोल रूम का वातावरण बदला हुआ था। वहाँ जा कर पता चला कि पृथ्वी से एक अंतरिक्ष यान मंगल ग्रह की ओर बढता चला आ रहा है। पृथ्वी के वैज्ञानिकों के पास मंगल ग्रह पर जीव होने का कोई प्रमाण नहीं था। वे इसी संदर्भ में मंगल ग्रह की मिट्टी का अध्ययन करना चाहते थे। मंगल ग्रह के अंदर की दुनिया की तो वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे। सभी ग्रह वासी सतर्क हो गए। सभा बुलाई जाती है ताकि इस संकट से निपटने का उपाय मिल सके। परंतु किसी अज्ञात कारणवश पृथ्वी से आया अंतरिक्ष यान रुक जाता है। उसे पृथ्वी पर वापस आने का संदेश मिलता है। आज भी मंगल ग्रह संबंधी जानकारी एक रहस्य है। वैज्ञानिक इसकी खोज कर रहे है।

छोटू की चारित्रिक विशेषताएँ -

1. जिज्ञासू (नया जानने की इच्छा) - छोटू के मन में तरह-तरह की जिज्ञासा उत्पन्न होती थी। अपने इन्हीं प्रश्नों का उत्तर ढूँढने के लिए वह कन्ट्रोल रूम गया था।

2. धैर्यहीन – छोटे बच्चों में अक्सर धैर्य की कमी होती है। छोटू का स्वभाव भी इसी तरह का था। तभी तो बीना किसी से पूछे उसने कॉन्सोल पैनेल का एक बटन दबा दिया था।

मंगल ग्रह सम्बंधित बातें -

(1) मंगल ग्रह का वातावरण सामान्य न होने के कारण वहाँ जीवन सम्भव नहीं है।
(2) पृथ्वी के वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर जीवन है या नहीं संबंधित जानकारी हासिल करने का प्रयास कर रहे हैं।
(3) मंगल ग्रह पर खोज करने के लिए पृथ्वी से कभी-कभी अंतरिक्ष यान भेजा जाता है।

पाठ का उद्देश्य -

प्रस्तुत पाठ 'पार नज़र के' में पृथ्वी से अलग किसी और दुनिया के होने की सम्भावित कल्पना की गई है। लेखक कहीं न कहीं हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं।

पाठ का संदेश –

पाठ के माध्यम से वैज्ञानिक तथ्यों से अवगत कराया गया है। मंगल ग्रह पर जीवन के सामान्य न होने की सम्भावनाओं को प्रस्तुत करना ही कहानी का संदेश है।